# श्री पार्श्वनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

**मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज**

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

| | | |
|---|---|---|
| कृति | : | श्री पार्श्वनाथ विधान |
| आशीर्वाद | : | संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित<br>आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज |
| कृतिकार | : | अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत<br>मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज |
| प्रसंग | : | मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का<br>स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023 |
| संयोजक | : | बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना |
| संस्करण | : | तृतीय, 1100 प्रतियाँ |
| सहयोग राशि | : | 30/- (पुनः प्रकाशन हेतु) |
| प्रकाशक | : | विद्या सुव्रत संघ |
| प्राप्ति स्थान | : | १. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना<br>Mob.- 9425128817<br>२. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846<br>३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889 |
| मुद्रक | : | विकास ऑफसेट, भोपाल |

## मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

## मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

# श्री नवदेवता पूजन

**(हरिगीतिका)**

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

**(दोहा)**

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

**ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।** (पुष्पांजलिं...)

**(सखी)**

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।**

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।**

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।**

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।**

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।**

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।**

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।**

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।**

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

**ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

## जयमाला

**(दोहा)**

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

**(भुजंगप्रयात)**

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

**ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।**

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

## अर्घ्यावली

### अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

**ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

### विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

**ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।**

## चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

**ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

**ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

**ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

**ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

**ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

**(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)**

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

**ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

**ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

**ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

**ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

## पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

**ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

**ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

**ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

**ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

## जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

## सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

**ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।**

## निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

**ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

## श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

**ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

**आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य** (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

**ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

**मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य** (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

**ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

# श्री पार्श्वनाथ विधान

जय बोलिये
खलु चिच्चदेव अरिहंतदेव,
देवों के देव, देवाधिदेव,
उपसर्गों के विजेता,
मोक्षमार्ग के नेता,
परम धैर्यधारी, चैतन्य चमत्कारी,
चिंतामणि, परम पारसमणि,
अंतरिक्ष निवासी, घट-घट के वासी
परम यशवान्,
साक्षात् मूर्तिमान्,
निराकुल चित्त, परम पवित्र
परमपूज्य
श्री पार्श्वनाथ भगवान् की जय॥

## भजन

ओ! दीनानाथ, मेरे प्रभु पारसनाथ।
नाथों के नाथ, मेरे प्रभु पारसनाथ॥

तुम देवों के देव कहाते[2],
सब पर तुम करुणा बरसाते[2]
सुन लो मेरी बात, मेरे प्रभु पारसनाथ।
ओ! दीनानाथ.....

भूल हुई या भूल गये तुम[2]
क्यों मेरे स्वामी रूठ गये तुम[2]
रख दो सिर पर हाथ, मेरे प्रभु पारसनाथ।
ओ! दीनानाथ.....

मैं तुमसे कछु और न चाहूँ[2]
जनम-जनम तेरे दर्शन पाऊँ[2]
दे दो आशीर्वाद, मेरे प्रभु पारसनाथ।
ओ! दीनानाथ.....

मेरा भी कल्याण करा दो[2]
मेरी नैया पार लगा दो[2]
'सुव्रत' को दो साथ, मेरे प्रभु पारसनाथ।
ओ! दीनानाथ.....

# श्री पार्श्वनाथ विधान

**स्थापना (दोहा)**

निर्बलता अब छोड़ कर, निर्मल भजो जिनेश।
प्रभु-पूजा वरदायिनी, वर पा बनो महेश॥

**(लय : शांतिविधानवत्)**

हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! उपसर्गजयी।
हे चिंतामणि! अंतरयामी!, हे पार्श्वनाथ! परिषह विजयी॥
जिनने अपने मानस तल पर, प्रभु! नाम किया अंकित तेरा।
वे अतिशय ऊर्जावान हुये, पा शक्ति, मुक्ति का पथ डेरा॥

तूफान घटा हो या आँधी तो पार्श्वनाथ के भक्त कभी।
ना चंचल हों ना धैर्य तजें, हैरान नहीं हों दास सभी॥
वे कर्मजयी हों दयामयी, जो पार्श्वनाथ को पाते हैं।
हम करें अर्चना कल्याणी, हो विश्वशांति यह ध्याते हैं॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्ग विजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर.....।**
**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्ग विजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः.....।**
**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्ग विजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो.....।**

**(पुष्पांजलिं....)**

**(ज्ञानोदय)**

जनम-मरण का क्या कहना? पर,असमय मरण कभी सोचे।
माँ के आँसू इतने बरसे, सागर पड़े बड़े छोटे॥
जल से जनम मरण हरने को, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।**

आपस की टकरार भयंकर, जलें महावन भी इससे।
भवाताप का क्या कहना हो?, भव-भव में जलते इससे॥

चंदन से भव-ताप मिटाने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं.....।**

धरा रहेगी, धरा रहेगा, हमको तो निश्चित जाना।
मुट्ठी बाँधे सब आते पर, हाथ पसारे ही जाना॥
पुंज चढ़ा अक्षयपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन बस जायें॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।**

काँटों से हम बचते रहते, तभी फूल ना खिल पाते।
सम्यक् ना पुरुषार्थ करें तो, आत्म शांति भी ना पाते॥
पुष्प चढ़ाकर काम नशाने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।**

भोजन कर ज्यों मौज उड़ाते, अगर बुराई त्यों खायें।
देह-व्याधियाँ लूट-मार सब, तत्क्षण जग से नश जायें॥
ये नैवेद्य क्षुधा रुज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।**

दीप जला आरति करने से, शाम-रात क्या हट सकती?
पर श्रद्धा दीपक से अपनी, शाम-रात भी टल सकती॥
अपना श्रद्धा दीप जलाने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।**

धूप जले खुद, पर जग महके, उसे पराये राख करें।
ऐसे ही आतम का सौरभ, कर्म कीच रज नाश करे॥

खेकर धूप कर्म-रज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।**

आज सँभालो कल सँभलेगा, हर मुश्किल का हल होगा।
पल मत खोना छल मत करना, मंजिल-पथ समतल होगा॥
विधिफल त्याग मोक्ष फल पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।**

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाये, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

स्वर्ग त्यागकर चौदहवाँ जब, दूज कृष्ण वैशाख रही।
ब्राह्मी जी के गर्भ पधारे, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व गर्भकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

**ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

पौष कृष्ण ग्यारस शुभ तिथि में, नगर बनारस जन्म लिया।
विश्वसेन राजा का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व जन्मकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

**ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

पौष कृष्ण ग्यारस को सारा, त्याग परिग्रह दीक्षा ली।
तप कल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥

अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
तपकल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आये॥

**ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

चैत्र कृष्ण चौदस प्रातः में, घाति कर्म सब नशा दिये।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किये॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

**ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्दश्यां (चतुर्थ्यां) ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।**

श्रावण शुक्ल सप्तमी प्रातः, प्रतिमायोगी कर्म नशा।
मोक्ष गये सम्मेदशिखर से, हम पायें सब यही दशा॥
अष्ट कर्म का बंधन सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

**ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

## जयमाला

**(दोहा)**

दुनियाँ में यशवान हैं, पार्श्वनाथ जिनराज।
गुण गाते हम, तुम करो, हमरे दिल पर राज॥

**(सुविद्या)**

बड़े कमठ मरुभूति अनुज थे, सगे भ्रात विपरीत।
एक पाप विष दुख सा दूजा, धर्मामृत की रीत॥
धर्मनीति का ज्ञाता छोटा, बड़ा दुष्ट भू-भार।
नारीवश हो शत्रु कमठ ने, दिया अनुज को मार॥ 1॥

आठ-आठ भव कमठ जीव ने, गहन किया उपसर्ग।
भव-भव में मरुभूति जीव ने, सहन किया उपसर्ग॥
जब राजा आनंद नाम का, जीव धरा वैराग्य।
मुनि बन तपकर चउ आराधन, किया लिया सौभाग्य॥ 2॥

सोलहकारण भाय भावना, तपश्चरण कर घोर।
नामकर्म तीर्थंकर बाँधा, चले मुक्ति की ओर॥
इन्द्र स्वर्ग में बने यहाँ पर, पारस राजकुमार।
शतायु पारस का तन हरियल, उग्रवंश भर्तार॥ 3॥

पारस के नाना तापस थे, पंच-अग्नि तप-भूत।
यौवन क्रीड़ा में पारस जी, समझाये शिव-दूत॥
काष्ट कटी तो सर्प-सर्पिणी, कटे हुये दो भाग।
विगत भवों को जान पार्श्व ने, धार लिया वैराग्य॥ 4॥

बने निरम्बर ज्ञानी ध्यानी, तप रत मुनि विख्यात।
कमठ जीव तब शम्बर सुर ने, दिये कष्ट कुख्यात॥
हुये न चंचल पारस स्वामी, सहन किया उत्पात।
सहपत्नीक् धरणेन्द्र सर्प बन, दूर किया आघात॥ 5॥

घातिकर्म हर बने केवली, अनन्त-गुण भर्त्तार।
उन्हें केतु ग्रह में लोगों ने, बाँधे दिन रविवार॥
जैसे माँ के आगे बालक, निजी योग्यता भूल।
योग्य-अयोग्य माँगता तो माँ, देती नहीं समूल॥ 6॥

नाथ! हमारे मात-पिता तुम, आप हि पालनहार।
दुख उपसर्ग आदि सहने को, दो पारसमणि हार॥
जिससे हम भी ऋद्धि-सिद्धि से, हो जायें परिपूर्ण।
'सुव्रत' धरकर कर्म विजेता, बनें सिद्ध सम्पूर्ण॥ 7॥

**(दोहा)**

पारसमणि बस लोह को, स्वर्ण करे बहुमोल।
जिन पारसमणि तो करे, सिद्ध सौख्य अनमोल॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।**

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

**(शांतये शांतिधारा...)**

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

**(पुष्पांजलिं.....)**

## विधान अर्घ्यावली

### भयहर जिनवर गीता

### भयहर संथवो/नमिऊण स्तोत्रं

**नमिऊण पणय-सुर-गण-चूड़ामणि-किरण-रंजिअं मुणिणो।**
**चलण - जुअलं - महाभय - पणासणं संथवं वुच्छं॥ 1॥**

**(पद्यानुवाद - ज्ञानोदय)**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

**(हाकलिका-14 मात्रिक)**

विनयवान सुर-वर्ग सभी,मणिमय धारें मुकुट सभी।
उज्ज्वल उनकी मणि किरणा, करें प्रकाशित प्रभु चरणा॥
देव पूज्य प्रभु चरण युगल, पारस प्रभु के चरण कमल।
जिन्हें नमन कर हम ध्यायें, थवन महा-भयहर गायें॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं महाभयातङ्कविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**सडिय-कर-चरण-णह-मुह-णिबुड्डणासा विवण्ण-लायण्णा।**
**कुट्ठ - महारोगाणल - फुलिंग-णिद्दड्ढ - सव्वंगा ॥ 2॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

जिनके हाथ पैर प्यारे, नख मुख सड़े मनोहारे।
तोता-नासा पूर्ण धँसी, सुन्दरता खो हुयी हँसी॥

कुष्ठ-रोग की महा अनल, अंगारे दहके पल-पल।
उससे जो सर्वांग जले, पार्श्व कृपा से हुये भले॥
**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं कुष्ठमहारोगानलविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**ते तुह चलणाराहण - सलिलंजलि-सेय-वड्ढियच्छाया।**
**वण-दण-दड्ढागिरि-पायवव्व पत्ता पुणो लच्छिं ॥3॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

कुष्ठआदि से वे जल-जल, प्रभुपद पूजन का ले जल।
चुल्लू भर सिंचन करके, कांतिमान हो अति चमके॥
जलकर ज्यों दावानल से, वृक्ष भयंकर हो वन के।
हरे-भरे हों वर्षा से, पार्श्व-कृपा जल वर्षा दे॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं रोगादिक मानसिकसंताप विनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**दुव्वाय खुभियजल-णिहि उब्भड-कल्लोल-भीसणारावे।**
**संभंत भय विसंठुल णिज्जामय-मुक्क-वावारे ॥4॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

दुष्ट पवन से क्षुभित हुआ, तूफानों से कुपित हुआ।
उत्कट लहरों से सागर, भीषण नाद करे थर-थर॥

जिसे देख नाविक काँपें, क्षुब्ध सभय हड़-बड़ नाँचें।
नाविक छोड़े काम जहाँ, पार्श्वनाथ ले थाम वहाँ॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं जलोदर आदिकसमुद्रभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**अविदलिअ-जाणवत्ता खणेण पावंति इच्छिअं कूलं।**
**पास जिण-चलण-जुअलं णिच्चं चिअ जे णमंतिणरा॥ 5॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

पार्श्वनाथ के चरण युगल, जो मानव नमते हर-पल।
यान उन्हीं के जल-घट में, फटें फँसे ना संकट में॥
पार्श्वनाथ के भक्त सभी, होते नहीं असक्त कभी।
पल-भर में इच्छित तट को,पा जावें वे शिव-घट को॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं मनोवाञ्छितफलप्रदाता चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**खर-पवणुद्धुय-वण-दव-जालावलिमिलियसयल-दुम-गहणे।**
**डज्झंत-मुद्ध-मय-वहु-भीसण-रव-भीसणम्मि वणे॥ 6॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

तीव्र पवन मालाओं से, बढ़ी हुयी ज्वालाओं से।
दावानल जो धधक रही, वन-पथ दुर्गम करत वही॥

वहाँ हिरणियाँ जो भोली, जलकर बोलें जो बोली।
गूँजे महा भयंकर वन, पार्श्वनाथ वह करें शमन॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं दावानलभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**जग गुरुणो कम-जुअलं णिव्वाविह-सयल-तिहुअणाभोअं।**
**जे संभरति मणुआण कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ 7॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

त्रय लोकों का नभ जल थल, करें क्षेत्र जो सब शीतल।
पूज्य जगत्-गुरु वे ऐसे, उनको भूलें हम कैसे?
पार्श्व जगत्-गुरु कहलाते, उनके पद-युग जो ध्याते।
नमस्कार जो करें उन्हें, कभी अग्नि भय नहीं उन्हें॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं समस्तविध अग्निभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**विलसंत - भोग - भीसण-फुरिआरुण - णयण - तरल - जीहालं।**
**उग्ग-भुअंगं नव-जलय-सत्थहं भीसणायारं ॥8॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

फण फैलाये खड़े हुये, रक्त नेत्र जो बड़े किये।
भीषण-भीषण जो चमके, चंचल जिह्वा भी लपके॥

नव बादल दल से काले, उग्र भयंकर छवि वाले।
नागराज जो क्रुद्ध हुये, पार्श्व नाम सुन क्षुद्र हुये॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं सर्पभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**मण्णंति कीड-सरिसं दूर-परिच्छुट्ठ-विसम-विस-वेगा।**
**तुह णामाक्खर-फुड - सिद्धमंत-गुरुआ णरा लोए॥ 9॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

पार्श्वनाथ को जो ध्याता, जग में वो ही विख्याता।
नामाक्षर वो पार्श्व जपें, सिद्ध मंत्र ही उसे कहें॥
वेग विषम विष आगों को, उग्र दुष्ट उन नागों को।
फेंके क्षुद्र कीट कह के, पारस प्रभु को जो जपते॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं सिद्धमंत्र चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**अडवीसु भिल्ल-तक्कर-पुलिंद-सद्दूल-सङ्ग-भीमासु।**
**भय-विहुर-वुण्ण-कायर-उल्लूरिय-पहिय-सत्थासु॥ 10॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

क्रूर भील तस्कर राशी,शोर मचायें वनवासी।
जहाँ दहाड़ें बाघ बड़े, वन में ज्यों यमराज खड़े॥

वहाँ लुटे मुँह लटकाये, कातरपंथी भय-खाये।
पार्श्वनाथ ऐसे वन में, ध्याते भक्त सदा मन में॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं दुष्टक्रूरकृतभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**अविलुत्त-विहव सारा तुह णाह! पणाममत्त-वावारा।**
**ववगय-विग्घा सिग्घं पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं॥ 11॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

भक्त पार्श्व प्रभु के हैं जो, लुट सकते क्या वन में वो।
लुट न सके वैभव उनका, दूर विघ्न हो भय उनका॥
बस प्रणाम तुमको करके, मन वांछित फल वो वरते।
इच्छित धाम वही पाते, पार्श्वनाथ को जो ध्याते॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं लूटमारि चोर भयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**पज्जलि आणल-णयणं दूर वियारिअ-मुहंमहाकायं।**
**णह-कुलिस-धाय-विअलिअ-गइंद कुंभत्थला भोअं॥ 12॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

अंगारे धधकें जैसे, जिनके लाल नयन ऐसे।
मुख की तीव्र दहाड़ों से, नख के वज्र प्रहारों से॥

महा गजों के कुंभस्थल, क्रोधित सिंह करते घायल।
ऐसे सिंह से क्या डरते?, पार्श्वनाथ को जो भजते॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं सिंहभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**पणय-ससंभम-पत्थिव-णह मणि माणिक्क-पडिअ पडिमस्स।**
**तुह-वयण-पहरण धरा सीहं कुद्धंपि ण गणंति॥ 13॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

प्रभु के नख चमकें ऐसे, मणि माणिक्य दिव्य जैसे।
राजाओं के तन जिनको, सविनय झुकते हैं उनको॥
पार्श्व वचन के आयुध को,भक्ति सहित उर धारक जो।
कुपित सिंह को गिने नगण्य, प्रभु कृपा से जो हैं धन्य॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं शस्त्रास्त्रभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**ससि-धवल-दंत-मुसलं दीह-करुल्लाल-वड्ढिउच्छाहं।**
**महुपिंग-णयण-जुअलं ससलिल-णव-जल-हरायारं॥ 14॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

दाँत मूसलों जैसे हैं,चमकित धवल चाँद से हैं।
दीर्घ सूँड़ की फटकारें, हर्ष बढ़ायें चिंघाड़ें॥

मधु सम पीत नयन वाले, नये मेघ जैसे काले।
महागजों का झुण्ड निकट, पार्श्वभक्त को क्या संकट॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं गजेन्द्र उपद्रवकृतभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**भीमं महागइंदं अच्चासण्णंपि ते ण विगणंति।**
**जे तुम्ह चलण-जुअलं मुणिवइ! तुंगं समल्लीणा॥ 15॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

हे! मुनियों के जिन ईश्वर, जो हैं तुमरे ही अनुचर।
श्रेष्ठ चरण तुमरे पाके, सम्यक्-रत हैं गुण गाके॥
कुपित समद गजराजों को, आगे पा यमराजों को।
कुछ भी नहिं गिनते वे जन, पार्श्व करें जिनका रक्षण॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं प्रताड़नाभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**समरम्मि तिक्ख खग्गा-भिग्घाय-पविद्ध-उद्धुय-कबंधे।**
**कुंत-विणिभिण्ण-करि-कलह-मुक्क-सिक्कार-पउरम्मि॥ 16॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

जहाँ तेज तलवारों ने, मस्तक काटे वारों ने।
कंपित धड़ बिन सिर वाले, जिनको फाड़ गये भाले॥

कटे शीश गज-तन फाड़े, जहाँ युद्ध में चिंघाड़े।
वहाँ शत्रु उन से डरते, पार्श्व नाम जो उर धरते॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं युद्धभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**णिज्जिअ-दप्पुद्धर-रिउणरिंद-णिवहा भडा जसं धवलं।**
**पावंति पाव पसमिण-पास-जिण! तुहप्प भावेण॥ 17॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

हे अघ शामक पारस जिन!, नृप जो तुमको करें नमन।
तो प्रभाव तुमरा पा के, सब युद्धों में जय पाते॥
शत्रु वर्ग के जो राजा, गर्वोन्नत से सिर ताजा।
उन्हें जीत भट यश पाते, पार्श्वनाथ को जो ध्याते॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं अपयशभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**रोग-जल-जलण विसहर चोरारि-मइंद-गय-रण-भयाइं।**
**पास-जिण-णाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं॥ 18॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

आग रोग या पानी का, साँप चोर रिपु-प्राणी का।
युद्ध शेर गज संबंधी, जितने भय दुख अनुबंधी॥

पार्श्व नाम संकीर्त्तन से, सभी शान्त जिन अर्चन से।
भक्त पार्श्व जिनवर ध्या के, निर्भय बनके सुख पाते॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं सर्वरोगादिभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**एवं महाभय-हरं पास-जिणिंदस्स-संथुवमुआरं।**
**भविअ-जणाणंदयरं कल्लाण-परंपर-णिहाणं॥19॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

इस विध संस्तव ये न्यारा, पार्श्वनाथ का सुखकारा।
महा-महाभय-दुखहारी, इसको जप ले संसारी॥
भव्य जनों को सुखकारी, क्रमिक मोक्ष का भण्डारी।
तभी भक्त इसको पढ़ के, भयहर निर्भय हो बढ़ते॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं समस्तविधसंसारभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**रायभय-जक्ख-रक्खस-कुसुमणि दुस्सउण-रिक्ख-पीडासु।**
**संझासु दोसु पंथे उवसग्गे तह य रयणीसु॥ 20॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

राज यक्ष राक्षस का भय, बुरे शकुन सपनों का भय।
ग्रह नक्षत्र जन्य पीड़ा, पथ-उपसर्ग हरे धीरा॥

तो इस उत्तम संस्तव को, सुबह-शाम-निशि में सुन लो।
या जो पढ़े पार्श्व गाथा, भयहर पाते सुख-साता॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं राजग्रह भूत पिशाच स्वप्नादि सकलभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**जो पढई जो अ णिसुणइ ताणं कइणो य माणतुंगस्स।**
**पासो पावं पसमेउ सयल भुवणच्चिया चलणो॥ 21॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

पार्श्वनाथ की यह गीता, पढ़ सुन ध्याकर जो जीता।
उसके पाप गलित होवें, 'मानतुंग' भी क्यों रोवें॥
हे जग पूज्य! चरित वाले, पार्श्वनाथ जग रखवाले।
मानतुंग का अघ हर लो, विश्वशांति को तुम वर दो॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं समस्तविधपीड़ाभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**उवसग्गंते कमठा-सुरम्मि झाणाउ जो ण संचलिओ।**
**सुर-णर किण्णर-जुवईहिं संथुओ जयउ पास-जिणो॥ 22॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

कमठ जीव जो असुर बना, कर डाला उपसर्ग घना।

पार्श्वनाथ खा अघ-कोड़े, विचलित नहीं हुये थोड़े॥
सुर नर किन्नर किन्नरियाँ, पूजें प्रभु की पद लड़ियाँ।
ऐसे प्रभु जयवन्त रहें, पारस प्रभु जयवंत रहें॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं समस्तविध उपसर्गभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**एअस्स मज्झयारे अट्ठारस-अक्खरेहि जो मंतो।**
**जो जाणइ सो झायइ परम-पयत्थं फुडं पासं॥ 23॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

इस संस्तव में जो प्यारा, महामन्त्र खोजे न्यारा।
बना अठारह अक्षर का, पता बताये जिनवर का॥
जो जाने वह सुख का घर, परम तत्त्व पारस जिनवर।
पार्श्वनाथ को भी ध्या के, पदस्थ ध्यान का सुख पाते॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं समस्तकुमन्त्रकृत उपद्रवभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**पासह-समरण जो कुणइ संतुट्ठे हियएण।**
**अट्ठुत्तर-सय वाहि भय णासइ तस्स दूरेण (खणेण)॥ 24॥**

**पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।**
**भयहर थव नमिऊण स्तोत्र से, जिनवर गीता गाते हैं॥**

जो संतुष्ट हृदय द्वारा, सविनय त्रय योगों द्वारा।
हँसी-खुशी से पारस जिन, सुमरण करता है हर क्षण॥

रोग व्याधियाँ कष्ट सभी, नशे एक सौ आठ तभी।
पारस का जो ध्यान करे, 'सुव्रत' बन भगवान् अरे॥

**मानतुंग की पावन कृति से, पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।**
**भयातंक बिन विश्वशांति हो, यही भावना भाते हैं॥**

**ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतव्याधिभयविनाशनसमर्थ चिन्तामणि श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।**

**पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)**

सब उलझन सुलझन में बदलें, दुर्लभ काम सुलभ होते।
पारस प्रभु का नाम मात्र सुन, विघ्न कष्ट फक-फक रोते॥
आज आपके गुण गाकर हम, धन्य-धन्य हो गये अहा।
मरण समय प्रभु नाम न भूलें, यही मिले वरदान खरा॥

**(दोहा)**

पार्श्वनाथ के दर्श से, दिखता भव का तीर।
अर्घ चढ़ायें आज हम, समझें निज तकदीर॥

**ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।**

**जाप्यमंत्र**

**ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।**

**अथवा**

**ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय विश्व-उपद्रवभय प्रशमाय नमो नमः।**

**अथवा**

**ॐ ह्रीं अर्हं पास-जिण-णाम संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं।**

## समुच्चय जयमाला

**(दोहा)**

कष्ट उपद्रव भय हरें, और दिये सुखदान।
ऐसे पार्श्व जिनेश का, हम करते गुणगान॥

**(सुविद्या)**

जय-जय पारस! जय-जय पारस!जय-जय पारस नाथ!
भक्त तुम्हारी गीता गाकर, सदा झुकायें माथ॥

आखिर गुण हम क्यों ना गायें, क्यों ना टेकें शीश।
तु ही ने तो हमें सँभाला, देकर पद-आशीष॥ 1॥

पार्श्वनाथ का हम ना लेते, अगर भक्ति से नाम।
तो हम भी भय बाधाओं में, क्या कर पाते काम॥
बड़ी कृपा है, खूब दया है, हम पर तुमरी देव!।
नाम मात्र सब काम बना दे, मिलता वर स्वयमेव॥ 2॥

जिसको तेरा वर मिल जाये, उसका अलग कमाल।
धरती अम्बर उससे रोशन, थामे धरम मशाल॥
हमको लगता पार्श्वनाथ को, ना समझा संसार।
तभी विश्व में आगजनी या, मचती हा-हा कार॥ 3॥

जरा सोचिये आज हमारे, तन मन का क्या हाल?
अगर पूजते पार्श्वनाथ को, तो ना मिले मलाल॥
विनय सहित सब प्राणी होते, ना पाते अघजाल।
नहीं रोग अंगारे धधकें, जहाँ कृपा प्रभु-माल॥ 4॥

जलयात्रा मंगलमय होती, क्या तूफानी पीर।
सागर तट के साथ मिलेगा, भव-सागर का तीर॥
बियावान वन की ज्वालायें, खुद हो जातीं शांत।
नहीं जलेंगे भटके प्राणी, भटकन हुयी प्रशान्त॥ 5॥

महाभयंकर गूँजें वन की, बने सरस संगीत।
आग-नाग का भय ना रहता, वैर त्याग हो प्रीत॥
तीन लोक में शांति सुधा की, होती नित बरसात।
क्रुद्ध जीव भी क्रोध त्यागकर, मैत्रीमय हो साथ॥ 6॥

पार्श्वनाथ का सिद्धमंत्र जो, जपता जग विख्यात।
क्रूर बड़ी से बड़ी आपदा, यूँ ही हुई समाप्त॥

कुपित शेर रक्षक बन जाते, मित्र बनें गजराज।
युद्ध त्याग दें शत्रु हमारे, साथी हों यमराज॥ 7॥

नाथ! आपके संकीर्तन से, विश्व बने परिवार।
रोग शोक को क्या हरना फिर, मिले मुफ्त सुख हार॥
लेकिन दुनियाँ भूल रही है, पारस प्रभु का नाम।
पता नहीं क्या धर्म बिना हो, दुनियाँ का अंजाम॥ 8॥

अपनी केवल यही प्रार्थना, प्रभु से बारम्बार।
पार्श्वनाथ के उपसर्गों का, समझ सके जग सार॥
दयाधर्म मय प्रेम-भावमय, हो जीवन उपहार।
विश्वशांति हो दूर भ्रांति हो,'सुव्रत' की सरकार॥ 9॥

**(दोहा)**

बदल-बदल कर गीत हम, प्रभु से करने प्रीत।
पार्श्वनाथ जिन मीत से, हो हम सब की जीत॥

**ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।**

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

**(शांतये शांतिधारा....)**

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

**(पुष्पांजलिं.....)**

**॥ इति भयहर श्री पार्श्वनाथविधान सम्पूर्णम्॥**

**प्रशस्ति**

**(दोहा)**

रामटेक भू धाम में, शांतिनाथ पद-खास।
विद्यागुरु आचार्य का, ससंघ वर्षावास॥
दो हजार सन आठ में, दशम माह गुरुवार।
जहाँ रही तारीख दो, लिखा भक्ति उपहार॥

भयहर पार्श्व विधान से, मिले शांति भण्डार।
'मुनिसुव्रत' ने गीत गा, पाया पारस द्वार॥
विद्यागुरु के शिष्य हैं, सुव्रतसागर एक।
सिद्धोदय प्रभु पार्श्व को, जो भजते सिर टेक॥
भक्ति भाव से कर दिया, पार्श्वनाथ गुणगान।
कर्मों हमारी छोड़कर, शुद्ध पढ़े धीमान्॥

**॥ इति शुभम् भूयात्॥**

# आरती

(लय : टन टना टन.....)

झालर घंटी देख आरती, हम तो नाचें रे।
हम क्या नाचें बाबा सारी दुनियाँ नाचे रे।
झूम-झूम-झूम, झूम-झूम सारी दुनियाँ नाचे रे॥

भक्तों को भगवान् मिले हैं, प्यारे पारसनाथ।
जिनकी भक्ति करने सबका, झुक जाता है माथ।
ढोल मंजीरा ताली बाजे[2], घुँघरू बाजे रे॥
हम क्या नाचें .....॥ 1॥

तुमने सारी दुनियाँ त्यागी, त्यागे कौन तुम्हें।
तभी शरण में हम आये हैं, देखो नाथ हमें।
सूरज चाँद सुरासुर तेरे[2], यश को बाँचें रे॥
हम क्या नाचें .....॥ 2॥

अश्वसेन वामा के नंदन, बालयति परमेश।
दुख संकट उपसर्गविजेता, धरे दिगम्बर भेष।
आतम परमातम के रसिया[2], तुम ही साँचे रे॥
हम क्या नाचें .....॥ 3॥

मुँह माँगा वरदान मिला है, जिन श्रद्धालु को।
तुमसे तुमको माँग रहे हम, दान दयालु दो।
'सुव्रत' की झोली भर दो बिन[2], परखे जाँचे रे॥
हम क्या नाचें .....॥ 4॥